P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-7* (Part-1) October- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

# जनजाति उपयोजना क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के स्वसामर्थ्य का अध्ययन

**भारती सालवी**
व्याख्याता,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
ज्योतिबा फूले शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालय,
उदयपुर, राजस्थान

**सारांश**

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य का मुख्य उद्देश्य जनजाति उपयोजना क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के स्वसामर्थ्य का अध्ययन करना था। शोधार्थी ने शोधकार्य हेतु चितौड़गढ़ जिले से यादृच्छिक विधि से विद्यालयों का चयन किया है। 120 विद्यार्थियों का चयन किया जिसमें 60 उच्च उपलब्धि वाले तथा 60 निम्न उपलब्धि वाले विद्यार्थी थे। शोधार्थी ने दत्त संकलन के लिए स्वसामर्थ्य के लिए डॉ. अरूण कुमार सिंह एवं डॉ. श्रुति नारायण द्वारा निर्मित मानकीकृत उपकरण का प्रयोग किया गया है। दत्तसंकलन के पश्चात् उनको सारणीयन करते हुए आँकड़ो का विश्लेषण टी परीक्षण एवं आरेख प्रदर्शन के आधार पर किया गया। निष्कर्ष स्वरूप पाया गया कि उच्च एवं निम्न उपलब्धि वाले विद्यार्थियों के स्वसामर्थ्य में सार्थक अन्तर पाया गया।

**मुख्य शब्द :** जनजाति उपयोजना क्षेत्र, स्वसामर्थ्य।

**प्रस्तावना**

कोठारी आयोग (1964–66) के अनुसार ''किसी बालक को शिक्षा प्रदान करने हेंतु उसे जाति, धर्म, क्षेत्र एवं भाषायी रूप से पृथक करना होगा, तभी देश का सशक्त विकास सम्भव है।''

''विद्यालय समाज का लघु रूप होता है।'' जहाँ पर विभिन्न वर्गो, जातियों, वर्ण आदि को अग्रणी नहीं रखकर समानता से शिक्षा प्रदान की जाती है। परन्तु प्राचीनकाल में भारत की सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्था चार वर्णों में विभाजित थी। इस कारण धीरे–धीरे असमानता व्याप्त होने से विभिन्न दोष उत्पन्न हो गए। और जन्म को आधार मानकर जातियों का निर्माण किया गया।

स्वतन्त्रता के पश्चात् दिनांक 26 जनवरी 1950 को संविधान लागू होने पर सभी को समानता के अधिकार प्राप्त हुआ। समाज के पिछड़े वर्ग तथा जातियों को सामान्य वर्ग के समतुल्य करने हेंतु ''आरक्षण'' का प्रावधान रखा गया। इस हेंतु भारतीय संविधान में धारा–342 ''भारत की जनजातियाँ'' शीर्षक वर्णित किया गया। इसके साथ ही संविधान की धारा–46 में अनुसूचित जनजातियों के समग्र विकासार्थ सरकार द्वारा प्रयत्न किये गए।

इस कारण प्रत्येक विद्यालय का दायित्व है, कि वह अपने जनजाति वर्ग के विद्यार्थियो की व्यक्तिगत–भिन्नता की पहचान करें, तथा उसी अनुरूप शिक्षा की व्यवस्था करे।'' एक जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों पर इसका प्रभाव व्यापक होता है। क्योंकि ऐसे समूहों को भारतीय समाज में भी बहुत कठिनाई से स्वीकार किया जाता है। अतः बालक घर की विभिन्न परिस्थितियों को ध्यान में रखकर ही वृद्धि एवं विकास करता है।

**अध्ययन का उद्रदेश्य**

1. उच्च एवं निम्न उपलब्धि वाले जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों का पता लगाना।
2. समग्र न्यादर्श जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों के स्वसामर्थ्य का पता लगाना।
3. उच्च उपलब्धि वाले जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों के स्वसामर्थ्य का पता लगाना।
4. निम्न उपलब्धि वाले जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों के स्वसामर्थ्य का पता लगाना।
5. उच्च एवं निम्न उपलब्धि जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों के स्वसामर्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन करना।

**परिकल्पना**

उच्च एवं निम्न उपलब्धि जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों के स्वसामर्थ्य के अभिमत में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

**अनुसंधान का विधिशास्त्र**

1. प्रस्तुत शोध में शोध की प्रकृति को देखते हुए शोधार्थी ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया।
2. दत्त संकलन हेतु डॉ. अरूण कुमार सिंह एवं डॉ. श्रुति नारायण द्वारा निर्मित मानकीकृत उपकरण का प्रयोग किया गया है।
3. अनुसंधान कार्य के लिए न्यादर्श स्वरूप कुल 120 विद्यार्थी का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया है।

**सारणीयन एवं विश्लेषण**

**सारणी संख्या – 1**

**समग्र न्यादर्श जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों के स्वसामर्थ्य का श्रेणी विश्लेषण**

| क्र.सं. | जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों की संख्या | स्वसामर्थ्य की श्रेणी | मानक प्राप्तांकों की परास |
|---|---|---|---|
| 1. | 48 | उच्च | 85 या इससे ऊपर |
| 2. | 54 | औसत | 74–84 |
| 3. | 18 | निम्न | 73 या इससे कम |

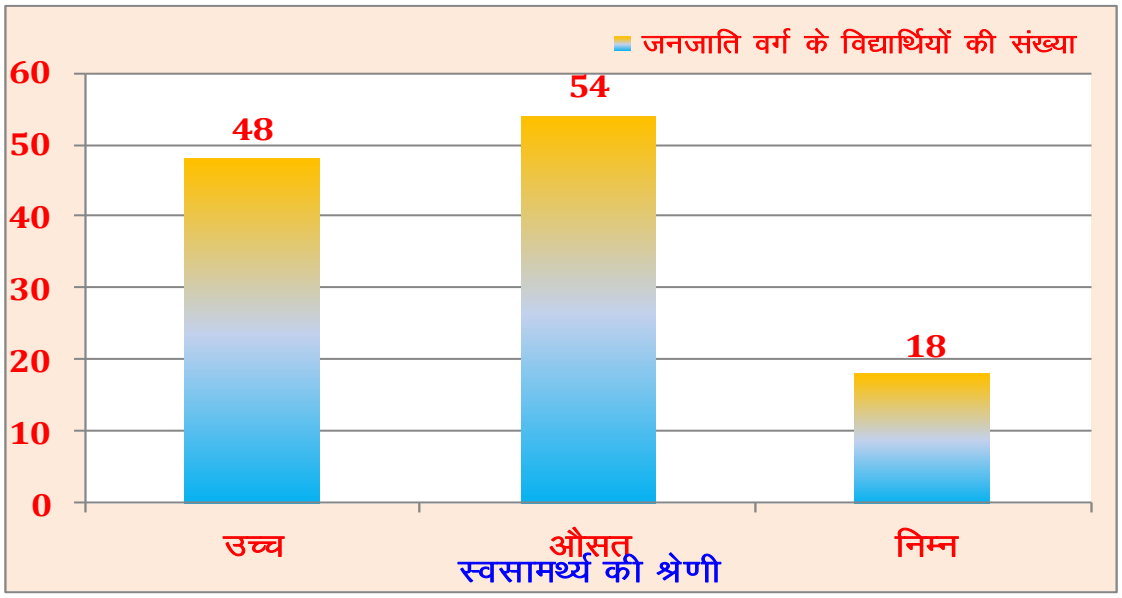


**श्रेणीवार विश्लेषण**

डॉ. अरूण कुमार शाह द्वारा निर्मित मानकीकृत उपकरण के मैन्यूअल की सारणी संख्या 5 के आधार पर किये गये विश्लेषण से पाया गया कि समग्र न्यादर्श में से 48 जनजाति विद्यार्थी उच्च स्वसामर्थ्य वाले, 54 जनजाति विद्यार्थी औसत स्वसामर्थ्य एवं 18 जनजाति विद्यार्थी स्वसामर्थ्य वाले पाये गये।

**सारणी सख्या 2**

**उच्च एवं निम्न उपलब्धि वाले जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों के स्वसामर्थ्य का मध्यमानवार तुलनात्मक विश्लेषण**

| क्र.सं. | समूह | N | मध्यमान | मानक विचलन | टी–मान |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | उच्च उपलब्धि वाले जनजाति वर्ग के विद्यार्थी | 60 | 71.40 | 5.99 | 3.69 |
| 2. | निम्न उपलब्धि वाले जनजाति वर्ग आवासीय विद्यालय में अध्ययनरत बालिका | 60 | 68.70 | 4.77 | |

स्वतंत्रता की कोटि = 118
0.05 विश्वास स्तर का मान = 1.98
0.01 विश्वास स्तर का मान = 2.60

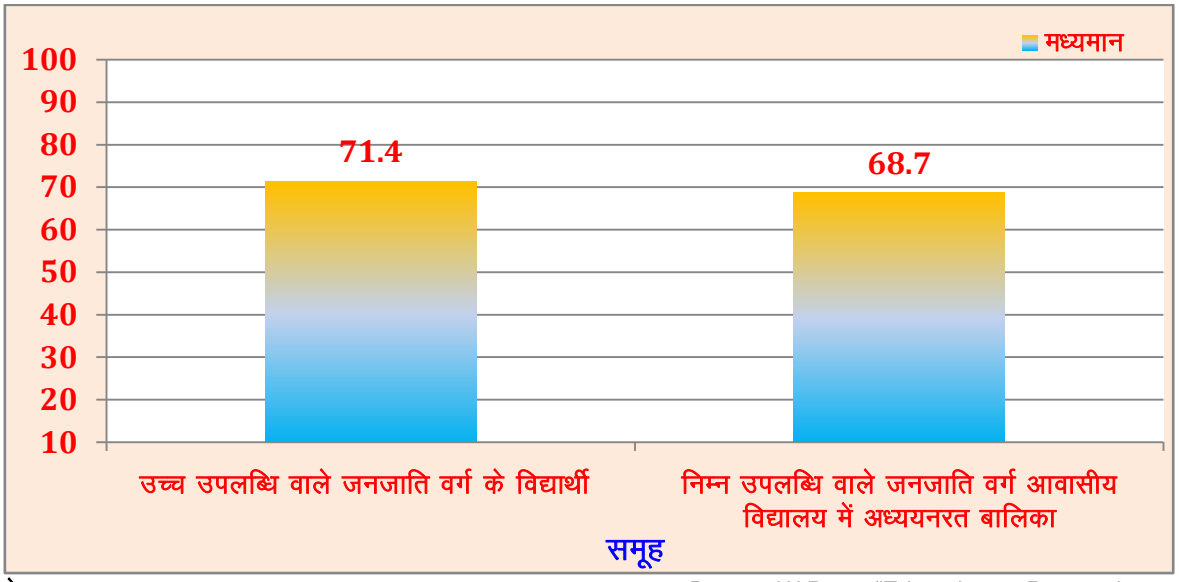


**विश्लेषण**

उच्च एंव निम्न उपलब्धि वाले जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों के स्वसामर्थ्य का तुलनात्मक अध्ययनार्थ करने हेतु मानकीकृत प्रमापनी पर प्राप्त उत्तरों के अंकों का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 71.40 ,68.70 व 5.99, 4.77 प्राप्त हुआ। दोनो समूहों के मध्यमानों के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करने हेतु टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया। दोनो समूहो के लिए टी–मान 3.69 प्राप्त हुआ जो कि स्वतन्त्रता कें अंश 118 के 0.05 स्तर के सारणी मान 1.98 व 0.01 स्तर के सारणीमान 2.60 से अधिक पाया गया। अर्थात दोनो समूहों के मध्यमानों के बीच सार्थक अन्तर पाया गया।

**निष्कर्ष**

अतः यह कहा जा सकता है कि उच्च उपलब्धि वाले जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों का स्वसामर्थ्य निम्न उपलब्धि वाले जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों से कम पाया गया।

**वर्तमान में प्रासंगिकता**

प्रस्तुत आलेख के द्वारा जनजाति क्षेत्र के विद्यार्थियों के स्वसामर्थ्य में वृद्धि कर सकेगे।

**संदर्भ ग्रंथ सूची**

1. *A. E. Wool Folk : "Educational Paychology ; Ally and Baco", Vith E.d Boston London*
2. *Best, J.W.: "Research in Education", New Delhi, Prentice Hall of India (Pvt.) Ltd.*
3. *Borg W.R.: "Education Researches on Introduction", New York, Longman Green & Co. Ltd.*
4. *Bany Marya & Jhonson Lois V.: "Educational Social Psychology", Macmillan Publishing Co., Inc. New York*
5. *Cocher, W.G.: "Sampling Technique", Bobay, Publishing House*
6. *C. V. Good: "The Methodology of Education Research A Appleton centaury crofts", Inc. New york.*
7. *Crow Lesterd: "Psychology of Human Adjustment Alfred. A. Knopf, New York (U.S.A.)*
8. *Garrett, Henry E. & Woodworth, R.S: "Statistics in Psychology & Education" Bombay, Vikas Feffer & Simons Ltd*
9. *Good, Carter V., Bar and Scates Douglas E.: "Method of Research: Educational Psychological Sociological", New York: Appleton Century, Inc.*
10. *Garrett Henry E. : "Testing for Teachers", Curasia Publishing House, New Delhi*
11. *Kling J.W. & Riggs Lorrin A.: "Experimental Psychology", Khosla Publishing House*
12. *Lindgren Henry Clay (Ed) : "An Introduction to Social Psychology", Wiley Eastern Private Ltd., New Delhi*
13. *Murphy Gardner: "An Introduction to Psychology", Oxford & IBH Publishing Co., New Delhi*
14. *Mcconnell. James V. (Ed) : "Understanding of Human Behaviour", Holt, Rinehart and Winston, New York (U.S.A.)*